15461

युगलानन्य शरणाय नमः ❀

अनन्त जीवोद्धारक रसिकाचार्य वर्य अनन्त श्री
स्वामी युगलानन्यशरणजी महाराज विरचित
ग्रन्थावली से संगृहीत

15461

चतुष्ट-गुटिका

श्री मणिराम शोध संस्थान ... सीताराम

प्रकाशक-

श्री १०८ सियारामशरण 'मधुरमंजरी' जी

[गुरुधौली महाराज]

श्रीरामनवमी सं० २०२९

मूल्यः-५० पैसा

* सूची-पत्र *

क्रमाङ्क	विषय—	पृष्ठाङ्क
१—	प्रथम गुटिका—छमासोढ़शी (स्वतन्त्र मधुर प्रबन्ध है)	५
२—	द्वितीय गुटिका—उपदेश पचीसी (,, ,,)	८
३—	तृतीय गुटिका—अनन्य प्रमोद (,, ,;)	१२
४—	चतुर्थ गुटिका—श्रीसीताराम नाम सनेह वाटिका से संग्रहीत निम्नाङ्कित प्रकरण—	
	(क) श्रीगुरु महिमा—ग्रन्थारम्भ के प्रथम आठ छन्द	१
	(ख) संक्षेप कवित्त श्रीनाम परत्व	१७
	(ग) विविध उपदेश	२८
	(घ) पुनः श्री नाम परत्व (पहले संस्करणों से प्रकाशक द्वारा बढ़ाया हुआ।)	३२
	(ङ) श्रीसीताराम प्रसाद महिमा (प्रस्तुत संस्करण की विशेषता)	४०

शत्रुहन शरण

श्रीरामनवमी, सं० २०२६

15461

❋ नम्र निवेदन ❋

अनन्त कल्याण गुणगणनिलय, सौन्दर्य-माधुर्य सुधासिन्धु श्रीसीतारामजी की अहैतुकी कृपा से भगवद्रस में चेतनों की प्रवृत्ति होती है। जिन भगवद्रस रसिकोंने भक्ति सुधासागर में अवगाहन कर लिया है उनके लिये यहाँ से ब्रह्मलोक पर्य्यन्त वैभव नितान्त तुच्छ प्रतीत होते हैं।

उपासकों के मन बुद्धि इन्द्रिय एवं रोम रोम में प्रियतम की रूपमाधुरी छाई रहती है। प्यारे के नाम रूप लीला तथा धाम के रसिकों के लिये पुनः अनन्त श्रीविभूषित स्वामी श्रीयुगलानन्यशरणजी महाराज द्वारा विरचित चतुष्टगुटिका ग्रन्थरत्न का प्रकाशन हो रहा है।

आज से प्रायः चालीस वर्ष पूर्व इस चतुष्ट गुटिका का प्रकाशन श्रीलक्ष्मणकिला के महान्त श्रीरामोदारशरणजी की आज्ञा से तथा श्रीजनकनन्दिनीशरणजी की प्रेरणा से काशी वासो श्री-

गोपीप्रसादजी ने प्रकाशित किया था। इधर कई वर्षों से अप्राप्य होने से इस ग्रन्थ की माँग हो रही थी। श्रीसीतारामजी की कृपा से आचार्यों की दिव्य अनुभूतियों के प्रकाशन में इनकी श्रद्धा बढ़ेगी ऐसी आशा है।

पूर्व इस ग्रन्थ में क्षमा षोड़सी, उपदेश पचीसी, अनन्य प्रमोद, संक्षिप्त कवित्त ये चार प्रबन्ध थे, इस बार श्रीगुरु महिमा नाम महिमा धाम महिमा तथा श्रीसरयू महिमा सम्बन्धी कुछ छन्द बढ़ा दिये गये हैं इससे पुस्तक अत्यन्त उपयोगी हो गई है। आशा है उपासकों को इस ग्रन्थ के अनुशीलन से नाम रूप लीला तथा धाम में अनन्यनिष्ठा प्राप्त होगी।

निवेदकः—
स्वामी सीतारामशरण
अध्यक्ष श्रीलक्ष्मणकिला, अयोध्या

* श्रीसीतारामाभ्यां नमः *

चतुष्टगुटिका

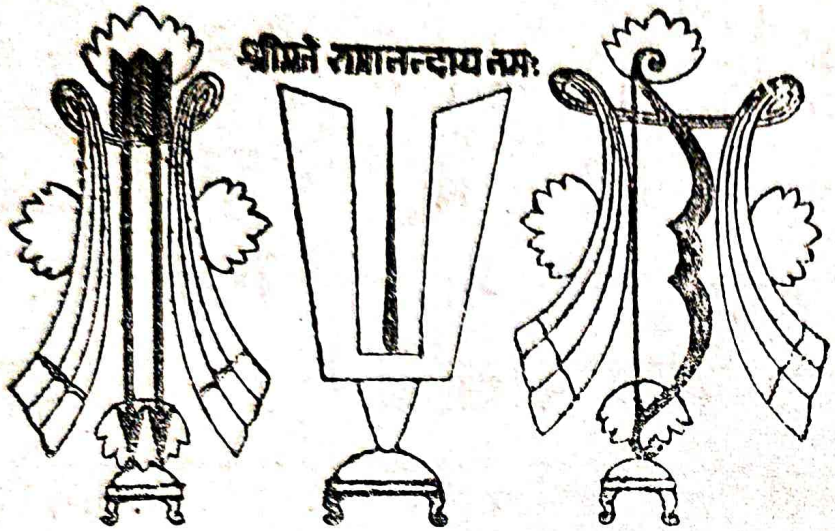

: श्रीगुरु महिमा :

[१]

सीताराम रूप अति अमल अनूप गुरु,
गहर गंभीर पद पंकज प्रकाशवर ॥१॥
वन्दौं बार बार अनुराग उमगाय उर,
अफुर रहस्य वोध विमल विहार घर ॥२॥
महाराज मंगल महल गुन नाम जस,
गावत सुजीह रीझि जात शीघ्र सीयवर॥३॥
(श्री)युगल अनन्य अति अकथ प्रताप ताप,
शमन हमेश वन्दनीय विधि हरिहर ॥४॥

[२]

नमो नित्य नेम से सहस्र बार सतगुरु,
चरन सरोज रज रहस निवास को ॥१॥
करुना नजर नेक निरखि निदेश वेष,
शत उपदेश दै मिटायो दुरवास को ॥२॥
सगुन अगुन पर प्रीतम परेश पटु,
प्रगट परत्व परखायो सुख खास को ॥३॥
(श्री)युगल अनन्य तम तोम मन नास करि,
अमल सुबोध दृग दियो दिव्य कासको ॥४॥

[३]

सरस शबद बाद स्वाद अपवाद हर,
अतर सुतर गर गारत करन को ॥१॥
दरसायो दहर दसा रहित एक रस,
सरस सुगुन सर्वेश विवरन कौ ॥२॥
उज्वल अमल जल थल हिय डारि मैल,
मलिन मदादि गुरु वासना हरनको ॥३॥
(श्री)युगल अनन्य न्योछावर निमेष पर,
तन मन प्रान धन चरन शरन को ॥४॥

[४]

मेरे सतगुरु पद पदुम की आस है।
जोग जप तप ध्यान धारना न जान्यो कछु,
मानौ नहिं अपर अनीस ईसरास है ॥१॥
करनी न लेस सपनेहुँ दरसात पर,
सिरताज गुरू महाराज ही के दास है ॥२॥
पावन परम छवि छावन पराग प्रिय,
धारत हमेश सोइ स्वाद सुखरास है ॥३॥
(श्री)युगल अनन्य सोच उभे लोक नेक नहिं,
मेरे सतगुरु पद पदम की आस है ॥४॥

[५]

सतगुरु साहेब सुजान स्वामि सिरमौर,
सब तौर संकट विकट हर लीजिये ॥१॥
ललित ललाम अभिराम पद कंज मंजु,
सेवन सनेह तन मनहूँ से दीजिये ॥२॥
मैं हौं मतिमन्द द्वन्द दारुण दबायो रोज,
चोज न चलत करुनेश कृपा कीजिये॥३॥
(श्री)युगल अनन्य जानकीशके कहाय जहाँ,
जाऊँ तहँ आपही परेश जू पसीजिये॥४॥

[६]

॥ सवैया ॥

श्रीगुरु कोमल शील स्वभाव सदा उर में अपने अनभावों ॥१॥
लौकिक वैदिक वाद विधान अनेक बहाय छटा छवि छावों ॥२॥
आठहु याम सुनाम रटौं सरयूतट में रहि शौक समावों ॥३॥
[श्री]युगल अनन्य प्रसन्न समेत दयानिधिते निति ये वरपावों।४।

[७]

शौक समेत कृपा कल केत नमो पद पंकज हेतु सजाई ॥१॥
श्रीगुरुदेव बिना निज भेद लहे नहिं कोटिन कृत्य कमाई ॥२॥
आप भुलाय समाय रहो गुरु बाग सुराग हीं बीज सदाई ॥३॥
[श्री]युगल अनन्य उपासन आन विहाय भजो गुरु भाव बढ़ाई ॥

[८]

श्रीगुरु मूरति ध्यान धरो निशिवासर प्रीति प्रतीति जमाई ॥१॥
श्रीगुरु बैन सचैन सुनो भव वासना वृन्द विशेष नशाई ॥२॥
काहु से लेन न देन रखो कछु श्रीगुरु आस हमेश सहाई ॥३॥
[श्री]युगल अनन्य छके रहिये गुरु पाय प्रसाद उछाह बढ़ाई।।४॥

इति श्रीयुगलानन्य शरण बिरचिते
श्रीगुरु महिमा समाप्तः

क्षमाषोडशी

दोहा

हे सीतावर प्रणत दुख, दरन हरन हियहाय।
मोहि अपनाइय शीघ्रतर, प्रभो बिलंब बिहाय ॥१॥
हे करुनेश उदार पन, समन सकल संताप।
कृपाकोर करि हेरिये, दीन जानि तपि ताप ॥२॥
हौं अधमाधम मंद मति, अबिहित रति सबकाल।
हे सियवर निज नीच लखि, अंगीकुरु ततकाल॥३॥
जन्मजूह जगजाल मधि, बँधिबुधिविशद विनाश।
कियो लियो दारुन दरद, अब कुरु क्षमा प्रकाश॥४॥
सुत नालायक अमित अघ, पुंज रहित पितु प्रेम।
तऊकृपाकरि जनक नित, पालत सहित सुक्षेम॥५॥
हे दयाल हौं दीन अति, ग्रसित मोह मद व्याल।
रक्षक सुप्रभु सेवाय नहिं, है दूसरो कृपाल ॥६॥

जित जोहों तित तिमिरमय, आमय अमित कृपाल।
बंधबिमोचन जानकी, बर निज नूर विशाल ॥७॥
पापी प्रबल प्रपंच पथ, प्रेमी प्रभु पद प्रीति।
रहित निखिल अवगुन भवन, कृपासिंधु सह भीति॥८॥
पाखंडी कृतहन निठुर, निंदक निरय निकेत।
पाहि-पाहि प्रभु पालिये, गहि भुज निरखि अचेत॥९॥
हैं हरसायत रहम छम, छमा करन पन नाथ।
अपनाइय अपराधनिधि, सब बिधि मुदप्रद गाथ॥१०
दीन बन्धु दीनार्त्ति हर, दीनानाथ दयाल।
दुखिया दीन नेवाजिये, सुकर धारि मम भाल ॥११
ऐसी कृपा कटाच्छ कुरु, बात्सल्य रसखानि।
विस्व बिलास बिहाय पद, भजौं जानकी जानि॥१२
छमा किये बिन सुकृतचय, साधत अघ न बिलात।
तातें तुरत दयाल दृग, देखिय जन्म सिरात ॥१३
यदपि बिस्वबिख्यात बहु, अवतारी अवतार।
तद्यपि मोहि न सपनेहूं, प्रभु बिन अपर अधार॥१४
भाव भजन वैराग्य बर, बोध निरोध बिहीन।
शरन २ भवभयहरन, सुरट लगो दिन दीन ॥१५

छमा शमा बिन तम तमा, जमा न होत हरास।
करुना रमा प्रकासिये, शमि संसति तति त्रास ॥१६
षोडश दोहा प्रभु बिनय, निज दीनता समेत।
युगलानन्यशरण रच्यो, पढ़त नसत यम प्रेत ॥१७
सावधान एकांत कहुँ, बैठि सुरुचि करु पाठ।
मिटे मोह ममता मलिन, उदय होत सुख ठाठ ॥१८

इति श्रीयुगलानन्य शरण बिरचिते
छमाषोडसी समाप्तः ॥

* श्रीसीतारामाभ्यां नमः *

उपदेश पचीसी लिख्यते

* दोहा *

शुद्ध अहार बिचारि के, करै कुदानहिं त्याग।
असत असन भक्षन किये, रहे न रस अनुराग ॥१॥

चलन फिरन इत उत वृथा. लालच लोभ समेत।
करै कदाचित कैसहूँ नहिं बुझाय मन प्रेत ॥२॥

नीच विमुख प्रभु पद कमल, हिंसकादि नृप पास।
याँचे नहीं सुतोष गहि, धरि अन्तर विस्वास ॥३॥

पाय विभव बहु त्रिबिध तउ, करे न मन अभिमान।
युगलानन्य ममत्व ते, रहित रहे प्रभु मान ॥४॥

शरनागत आवै कुजन, द्रोही तऊ न त्याग।
परम्परा सत पुरुष की, धारे रहै सुभाग ॥५॥

मद्य मांस निर्मूल करि, छोड़े तिमि तिन संग।
अवसि बढ़ै अनुराग प्रभु, चढ़ै अनूपम रंग ॥६॥

सीताराम परातपर, चरित हरित हिय हेतु ।
पढ़े मढ़े मनि सम सुमन कढ़े कदूरत केतु ॥७॥
गौरश्याम अभिराम तन, सतचिद मोद निकेत ।
नखसिख निरखे एकरस, एकटक शौक समेत ॥८॥
देह गेह सुख संपदा, प्रिय गन भये वियोग ।
शोक स्वपनेहुँ ना करै, लखि मिथ्या संयोग ॥९॥
भली भाँति तजवीज करि, करे काज शुभसाज ।
सहसा किये कलेश को, भाजन अधिक अकाज॥१०
काहू पर कबहूँ कहूँ, करै न कोह कराल ।
छमा रमा दृढ़ धीय धरि, गावे रहस रसाल ॥११
मन बच बपु दृग अंग मधि, शांति कांति भरिदेय।
फुरे न दे उद्वेग तिल, सो सियपिय रस लेय ॥१२
सुमिरन भजन यजन निखिल, शुभ सुकाजके बीच।
आलस स्वपनेहुँ ना करै, लहै सो पद अनमीच ॥१३
काम बाम आधीन नहिं, होय समुझि हित हानि ।
ह्वै एकांत दृढ़ दान्त दिल, पावै प्रभु मुदखानि ॥१४
जौन बचन अबिहित अरस, अकह न कहिये ताहि।
सरस सुबैन बिचारिके, बोलिय अनरित नाहिं॥१५

श्रुति सतमत दूषित करम, किल्बिष रूप निहारि।
प्रान पयानहुँ भए पर, नहिं कीजिये सम्हारि ॥१६
साँच आँच बिन स्वच्छ शुचि, सुरुचि बढ़ावनहार।
बैन चैन प्रद बोलिये, संतत तजि तम तार ॥१७
असत संग बहु लाभप्रद, प्रगट तऊ तेहि त्याग।
ठग मोदक मृदु मिष्ठतर, तउ अंतर बिष आग॥१८
करन कदंब समर सजग, जीते बिषय बिसारि।
इनको कहा न कीजिये, सतश्रुति सुमत बिचारि॥१९
अहंकार भव भार को, कारन सुनन बिलोकि।
त्यागे रागे प्रभु सुपद, पागे प्रेम अलोकि ॥२०
बिना बिचारे स्वल्पहू, कृत्य न करे सुजान।
पावै पल प्रति प्रीतिधन, विरहित धन व्यवधान॥२१
संत समागम निगम तरु, साधन सुफल बिचारि।
सकल समय कीजै सुरुचि, सुमिरत नाम खरारि॥२२
बसे सोहावन स्वच्छ थल, होत न जहाँ उपाधि।
अनुदिन बाढ़े बिसद गुन, प्रभु अनुकूल अबाधि॥२३
राग द्वेष मत्सर मलिन, दंभ दोष सुख सोष।
येनकेन बिधि त्यागिये, पाय विमल तर तोष ॥२४

सकल शास्त्र सिद्धांत शुभ, सब विधि पर उपकार।
कीजे पीजे प्रेम रस, सिय स्वामी सरकार ॥२५
सबसे समुझे आपको, लघुतर मान बिहाय।
सो सीताबर कृपा शुचि, सर मधि नित्य नहाय ॥२६
उपदेश पचीसी सुख शशी, सबबिधि पोषन हारि।
संतशास्त्र सिद्धांत मत, सबिधि देखावनवारि ॥२७
सावधान सह पाठ करि, कीजे कलित बिचार।
युगलानन्य अयास बिन, उतरि जाहु पर पार ॥२८
सात्विक संग सुग्रन्थ शुचि, बास सुभोजन चार।
सधे सतत अनमित नसत, आमय कृपा खरारि ॥२९
युगलानन्य शरन महा, मंद मलीन गँवार।
पै श्रीनामप्रताप ते, सुगम मोहिं सुखसार ॥३०
मम करनी सब भाँति ते, निंदित नहिं संदेह।
पै श्रीसीताराम की, कृपा पाय शुचि गेह ॥३१

इति श्रीयुगलानन्य शरण बिरचित
उपदेशपचीसी समाप्तः।

***

* श्रीसीतारामाभ्यांनमः *

* अथ अनन्य प्रमोद *

* दोहा *

श्रीसुखमानिधि जानकी, जीवन नेह निकेत।
बंदौं मारुतसुत सुखद, अति अनन्य व्रत केत ॥१॥
सर्वोपरि मुद मोदप्रद, सुमत अनन्य अनूप।
बड़भागिन हित कछु कहौं, शमन कलंक कुरूप ॥२॥
यदपि जगत मधि अमित मत, बरनहिं बिदुष बिचार।
तदपि अनन्य अनूप मत, नासन पथ व्यभिचार॥३॥
बिना अनन्य उपासना, सकल बतकही छार।
जैसे दूलह बिनु लगत, सुभग बरात बिकार ॥४॥
इष्ट मिलन कारन बिमल, समुझि अनन्य सनेह।
असत रीति पंचायती, बरसत बिष दुख मेह ॥५॥
चातक सतत सराहिए, गहे एक घन आस।
अपर बिहंग कुरंग सब, बिगत अनन्य बिलास ॥६॥
नौबत नेह निसंक नित, बजै अनन्यन द्वार।
प्रीतम प्रेम मधुर शबद, जा मधि छबिनिधि सार ॥७॥
जौलौं निज प्रिय इष्ट मधि, करति न मति परतत्व।
तौलौं होति अनन्यता, नहिं दृढ़ता शुचि सत्व॥८॥

जैसे सतपति को प्रिया, पतिव्रता करि बस्य ।
वैसेहीं बस इष्ट को, करत अनन्य अवस्य ॥९॥
धिग मानुष तन पायकै, कियो न भजन अनन्य ।
वृथा बाद बहकत बकत, बीत्यो बयस अधन्य॥१०
एक सुमन बहु सदन मधि, जौन लगावत मूढ़ ।
तौन बिवेक बिहीन नित,समुझत बस्तु न गूढ़॥११
अमित ईश यद्यपि बिदित, वेद पुरानन बीच ।
तदपि न मेरो काजकछु,सियपिय बिन सम मीच।१२
श्रीसीताबल्लभ अखिल, जीव ईश सिरताज ।
तिन पद पंकज प्रेम करु,परिहरु सकल समाज॥१३
सब साधन सम्पन्न फल, मोक्ष बदहिं बुध बेद ।
तेहि दिस दृग भरि नहिं लखै,निज अनन्य गत खेद॥
सुर नर ईश अनीस दिसि,नहिं चितवत चख चाहि।
निज प्रीतम रस मगन रहि, गहि अनन्य अवगाहि॥
विभिचारी डोलैं बिपुल, पढ़ि बहु वेद पुरान ।
भजन अनन्य सवाद बिन, सब मत धूरि समान ॥
श्रीसीतावर नाम गुन, धाम रूप बिनु आन।
कहै कहावै अपर कछु, सो व्यभिचार प्रमान ॥१७

बक्तापन सब व्यर्थ लखु, रहित अनन्य सुरीति।
ज्ञान ध्यान रस रंग बिन, वरनहिं बिमल बिनीत॥
सर्व स्वाद सुख सदन श्री, स्वच्छ अनन्य व्रतेश।
युगलानन्य शरन हृदय, धारत बस वरदेश॥१६
जाकी रति न अनन्य मत, असत बितायो जन्म।
ताकी गति करि भीमसम,तमगत सहित सभर्म॥२०
निराबरन झाँकी झलक, इष्ट स्वरूप अनूप।
बिना अनन्य उपासना, दुर्लभ प्रिय रसरूप॥२१
भजन करत सबहीं सुजन, निज२ रुचि अनुसार।
पै पावहिं नहिं देश वह, परमानन्द रससार॥२२
कोटिन कलप प्रजंतऊ, करै जोग जप ज्ञान।
तऊ न पहुँचै परमपद, रहित अनन्य बिधान॥२३
सदग्रंथन मधि अमित बिधि,आदि मध्य अवसान।
शुचि सिद्धांत अनन्य मत, नाशन मोह मलान॥२४
श्रीसीताबल्लभ बिमल, बिधुमुख बचन बिशेष।
हौं अनन्य आधीन नित, असंदेह प्रिय पेख॥२५
लोक बेद अन्तर परम, प्रभा प्रभाव अनन्य।
निर्बिबाद सिद्धांत सत,समुझहिं रहस सुधन्य॥२६

होइ एक को एक रस, अति आश्रित बसु याम।
सो सबबिधि पालनकरै, दै तन मन धनधाम ॥२७
सुधा सरोवर सम सुखद, भजन अनन्य विचारु।
अपर सकल साधन यथा, गोमय रस अतिछार ॥२८
चंचलता तजि इष्ट पर, कीजे सरस सनेह।
कहा बिराने भवन से, काज महा दुखगेह ॥२९
भजन अनन्य प्रताप की, महिमा अधिक अपार।
जानहिं रसिक अनन्यधी, तजि विकार व्यभिचार॥
श्रीसुख सियनागर कह्यो, मोहि अनन्य प्रिय प्रान।
तासु तंत्र नितहीं रहौं, बिरहित ईश बिधान ॥३१
परपति पेखति रेनुका, हनी गइ ततकाल।
बिदित अहिल्या की कथा, बिन अनन्य यह हाल॥
और अनेकन की कुगति, भई अनन्य विहीन।
होति हेरिए नैन निजु, सजु अनन्य मतपीन ॥३३
द्वैताद्वैत बिशिष्ट मत, तिमि अद्वैत सद्वैत।
सब सत मत स्वामी सुपद, समुझ अनन्य बनैत॥
खटका सबमत माँझ लखु, बूझ विवेक विचार।
बेखटके सब भाँतिसे, मत अनन्य अबिकार ॥३५

इष्ट सुजीवन मूल सत, सुधा लहे जन सोय।
जिनके मन मधि एकरस, मत अनन्य दृढ़ होय ॥३६
निंदा अधिक अजोग सम, रोग सोग जिय जानु।
सो न अनन्यन को उचित, साँच सखुन पहिचानु॥३७
अमल अनन्यन की रहनि, शांति सहित संतोष।
कामादिक प्रतिबिंबहूँ, नहिं परसत गुनि दोष ॥३८
बात बनाये से नहीं, मिलत अनन्य रहस्य।
ताते करतब सार शुचि, अरुचि शमन वरबस्य ॥३९
षटप्रकार सुखसार श्री, सुमत अनन्य सुगन्य।
सुजन सनेही समुझिहैं जिन के नेह सुधन्य ॥४०
युगलानन्य शरन सदा, निज अनन्य मत मोद।
माँझ निरत मन मति किये, पावत विशदबिनोद॥४१
स्वच्छ उपासक सुनि श्रवन, सुख पैहैं सब भांति।
व्यभिचारिन मनखटकिहै, रहितनेह निधिकांति॥४२
इति श्रीरहसि अनन्यमत, मंडल दोहा चारु।
पढ़त सुनत इत उत बिषय, नासिहैं सुरति निहारु॥

इति श्री श्री श्री श्रीस्वामी महाराजाधिराज सिरताज श्रीमहन्त जीवाराम मोदधाम लघु किंकरानुकिंकर युगलानन्यशरण बिरचित अनन्यप्रमोद समाप्तः ॥

* श्रीसीतारामाभ्यां नमः *

संक्षेप कवित्त श्रीनामपरत्व

* कवित्त १ *

मेरो मन कहूँ श्यामसुन्दर सों लागिहै ॥
प्रेम मकरन्द पूरि सुपद बिलोकि जानु,
जंघ कमनीय कटि आभरन रागिहै ।
नेहनिधि नाभि नैन निरखि अनूप उर,
त्रिवली तरंग बीच जानि अनुरागिहै ॥
कंठ कमनीय कल चिबुक कपोल द्विज,
वदन बिचित्र बिधु हेरि ताप त्यागिहै ।
[श्री]युगल अनन्य वाम दाम सुसनेह सम,
मेरो मन कहूँ श्यामसुन्दर सों लागिहै ॥

* कवित्त २ *

सोई सीताराम सों सनेह साँचो किये हैं॥
जिन्हें जग जाहिर जहर ज्वालमाल लगे,
पगे प्रिय पावन परत्व प्रेम पिये हैं ।

सोय श्याम सेवा सानुकूल शूल भूल बिना,
बिबिध विकार व्यवहार पीठि दिये हैं ॥
जानकी-जीवन जू को कलित गुनानुवाद,
गावत उमंग सजवाय लाह लिये हैं।
(श्री)युगल अनन्य स्वच्छसार संहितादि मत,
सोई सीताराम सों सनेह साँचो किये हैं ॥

* कवित्त २ *

सहस पचीस लों जपत जौन जीह नाम,
राम अभिराम ताहि मंगल अशेषे हैं।
जाके नेम अचल पचास सहसाधिक है,
सो तो देव देविन ते पूजित बिशेषे हैं ॥
जौन अनुरागी बड़भागी के सुनेम लच्छ,
सो तो परत्यक्ष स्वच्छ रहित अंदेशे हैं।
(श्री)युगलअनन्य ताकी महिमा बखाने कौन,
जाके सुखसागर की रटन हमेशे हैं ॥

* कवित्त ४ *

नाम तो अनन्त तामें रामनाम भूप है ॥
नारायण आदि नाम कहे कोटि वार तऊ,
तुल्यता न होत नाम बारक अनूप है ।
और नाम देत भुक्ति मुक्ति बिष्णुलोक लगि,
रटे राम नाम देश पावै रसरूप है ॥
कीजिये न हठ सठपन छोड़ि दीजे नाम,
परम पियूष और मत अन्धकूप है ।
(श्री)युगल अनन्य साँच बदत बजाय बात,
नाम तो अनन्त तामें राम नाम भूप हैं ॥

* कवित्त ५ *

और नाम दीपक मशाल तारा शशि सम,
रामनाम सूर शत सहस समान रे ।
और नाम शिता कंद मधु मीठ मिसरी सों,
रामनाम स्वच्छ सुधासार रसखान रे ॥
और नाम तन धन सदृश सोभायमान,
रामनाम प्रबल प्रधान पंच प्रान रे ।

* कवित्त *

(श्री)युगलअनन्य और नाम हैं बराती सम,
रामनाम दंपति विचारु त्यागु मान रे॥

* कवित्त ६ *

और नाम अपर मनीन के समान स्वच्छ,
रामनाम चित चिंतामनी चाहि चाह रे।
और नाम रैयत दिवान औ वजीर सम,
रामनाम अचल अखंड वादशाह रे॥
और नाम शिष्य सद समता सजाये सदा,
रामनाम गुरु गुन अगम अथाह रे।
(श्री)युगलअनन्य और नाम दिन चारि प्यार,
रामनाम एकरस नित्य निरबाह रे॥

* कवित्त ७ *

सहस करोरि वेर द्वारिका प्रयाग जाय,
पदुम अनेक वार कासिका विहारहीं।
मथुरा अवन्तिका अरब औ खरब वार,
मायापुरी कच्छप समान दृग धारहीं॥
जगन्नाथ बदरी केदारनाथ आदि सब,
तीरथ सुछेत्र जाय पदुम अपारहीं।

[श्री]युगलअनन्य तउ एकवार राम नाम,
मुख के उचारे सम कहे पाप भारहीं ॥

* कवित्त ८ *

ताहि पर वार वार कोटिन तलाक है ॥
चारो युग बीच मोच मद को मलनहार,
नाम सुखसार तरवार धार धाक हैं।
यामें जो मरमबुर धरमबुरीन जन,
जानत सुजान जौन दिव्य दिलपाक हैं॥
माया मल मद माँझ मोह्यो जाको चित्त तौन,
लखि न सकत नाम महिमा अचाक है।
(श्री)युगलअनन्य जाहि रुचत न रामनाम,
ताहि पर वार-वार कोटिन तलाक है॥

* कवित्त ९ *

नाम के रटन बिन छूटत न दाग है ॥
चाहो चारो ओर दौर देखो गौर ज्ञान हीन,
दीनता न छीन होय झीन अघ आग है।
जहाँ तक साधन सुराधन बिलोकिये जू,
बाधन उपाधन सहित नट बाग है॥

तीरथ की आस सो तो नाहक उपास्य हेतु,
एक बार राम कहे कोटिन प्रयाग है।
(श्री)युगलाअनन्य इत उत भ्रम श्रम दाम,
नाम के रटन बिन छूटत न दाग है॥

* कवित्त १० *

रटे नहीं नाम ताके मुख माँझ थूकिए॥
कीजिए न शंक रंक राव को समान मानि,
तानि बैन बान लच्छ चालत न चूकिये।
मान अपमान दिसि देखिये न भूलि कहूँ,
प्रबल प्रताप उपदेशहो न मूकिए॥
नाम महाराज सामराज सुखदैन गुन,
देव नर नाग कान चित्त बीच फूकिए।
(श्री)युगलअनन्य जौन संत सद्गुरु कहैं,
रटे नहीं नाम ताके मुख माँझ थूकिए॥

* कवित्त ११ *

रटे नहीं नाम सो विशेष बीट कीट हैं॥
जीवत मृतक ताते जानि न परत पीर,
अन्तक सदन जाय अन्त सिर पीटिहैं।

कहे हम पण्डित प्रवीन सभा जीते बहु,
रटे बिना नाम पढ़े पाथर औ ईंट हैं ॥
दान अभिमान सो तौ अतिही नदानपन,
नृग के समान नृप दानी गिरगीट हैं ।
(श्री)युगलअनन्य सब फोकट धरमु लखु,
रटे नहीं नाम सो विशेष बीट कीट हैं ॥

* कवित्त १२ *

रटे नहीं नाम ताके मुखही में नर्क है ॥
सुनिये न बात घात कठिन विचारि चित्त,
महाम्लेच्छ मूढ़ निसिचर से न फर्क है ।
नाना मतबाद व्योम सुमन सुगंध मांझ,
मोहि रहे मूढ़ कैसे जाने नाम अर्क है ॥
सीताराम लोक अभिराम भक्त पास सठ,
जात सकुचात रैन अैन गेह गर्क है ।
(श्री)युगलअनन्य बात बिदित पुरान बीच,
रटै नहीं नाम ताके मुखही में नर्क है ॥

* कवित्त १३ *

रटे नहीं नाम सो उपासक न राम को ॥
होत कहा बिबिध बनाये बात व्याधिवत
आधि ना मिटत बिना ध्याये सुखधामको ।
प्रबल उपासक सिरोमनी रहस्यनिधि,
निरखिये नैन निज बीर अभिराम को ॥
ऐसो जप्यो नाम एक रस बसु जाम,
रोम-रोम अंक दाम बात बिदित मोहाम को ।
(श्री)युगलाअनन्य शक सकल बिहाय कहैं.
रटे नहीं नाम सो उपासक न राम को ॥

* कवित्त १४ *

रटे जौन नाम तामें आवैं गुन राम के ॥
करूना कलित कृपा सरस सुशील सम,
दाया दीनहित चित दायक अराम के ।
अधिक अमान मानप्रद सदसार गुन-
ग्राही दुखदाही मृदुताई खास आम के ॥
कोमल बचन मन तन में कठोरता को,
लेस हूँ न मिले साँचे राचे सुखधाम के ।

[श्री]युगलअनन्य उर खटका न जानो नेक,
रटे जौन नाम तामें आवैं गुन राम के ॥

* कवित्त १५ *

नामिन के पास सुखरास रहैं छाय के ॥
जैसे धनवान देनवारे के समीप जन,
रहें सदा घेरि सुधि आपनी भुलाय के ।
जैसे सुत सिसुहीं न छोड़ें पाव पल मातु,
जैसे सद शिष्य गुरु सेवें सरसाय के ॥
जैसे दिव्य थलन के बीच बसें पुन्य पूत,
ऊत भूत नासन निमित्त भाव भाय के ।
[श्री]युगलअनन्य नेहनिधि निज नाम रत,
नामिन के पास सुखरास रहैं छाय के ॥

* कवित्त १६ *

और धन धूम कैसो धौरहर हेरिये ॥
भूप तसकर आग आदिक अनेक भीति,
रहे तन मन स्याह आह यों निवेरिये ।
महाराज नाम धन अद्वितीय जोहो जन,
जामें काहू भाँति से न काहू शंक घेरिये ॥

बाढ़े दिन दिन दिये दुगुन असंख गुन,
तातें सब त्याग करु नाम वित्त देरिये।
[श्री]युगलअनन्य समझावे सब संत श्रुति,
और धन धूम कैसो धौरहर हेरिये॥

* कवित्त १७ *

सीताराम नाम धन जाके साईं साहूकार,
राजन को राज सुरनायक निशंक है।
चौदहूँ भुवन बीच ऊँच नीच हीय माँझ,
फैलि रह्यो सुजस अनूपम मयंक है॥
ताके वर वदन बिलोके व्यवधान बिना,
दिव्यगुन ज्ञान कुल कटत कलंक है।
[श्री]युगलअनन्य श्रुति संमत सदैव स्वच्छ,
संत समुदाय बदै बैन दिए डंक है॥

* कवित्त १८ *

जौन थल सम्यक कलेश को निवास नित,
तौन थल नामही का कृपा पाय बांचिहो।
तहाँ न सहाय कोऊ मातु पिता बंधु मात,
दारा सुत झूठे याते इनमें न राचिहो॥

आपनेई स्वारथ समेत सजे नेह सब,
तेरो हितकारी नाम वाही मध्य माचिहो ।
[श्री]युगलअनन्य साँच कहैं सब संत गुरु,
राम नाम जपे फेर जग में न नाचिहों ।।

* कवित्त १६ *

हाय बपु मानुषहुँ पाय न उधार्यो आप,
ताते बार बार सहे ताप दाप दाम है ।
प्राप्त परतच्छ प्रेमसिंधु श्रीभरतखण्ड,
ताहू में सरंग सतसंग अभिराम है ।।
सुलभ उपाय नाम रटन बतावें सन्त,
बड़े दयावन्त तऊ मानत न वाम है ।
[श्री]युगलअनन्य अन्त होयगी खराबी खल,
रहेगी न आवी दुख घोर परिनाम है ।।

* सवैया २० *

नाम मनोहर चूंदरी चारु, सुचाह से हे रसने नित धारो ।
कैसेहूँ काय कलेश पड़े पर, पाव घड़ी सपने न उतारो ।।
दिव्य दशा दुति दूनी दशो दिशि, दाम सुधाम नवीन निहारो ।
[श्री]युग्म अनन्य करोरन भूषन, चूंदरी रंग के ऊपर वारो ।।

* कवित्त २१ *

नाम अनुरागिन की रीति मन पार है ॥
रहैं संक तंक बिन अचल अडोल नित्त,
चित्त में प्रताप नाम छायो अविकार है ।
वहे वर बात उनचास हूं समुन्द सात
होय जाय एक तऊ खेद न विकार है ॥
सूर सत उदित के भये में न लेश डर,
सावधान वृत्ति नाम लीन एक तार है ।
[श्री]युगलअनन्य मेरी मति ना पहुँचि सके,
नाम अनुरागिन की रीति मन पार है ॥

* कवित्त २२ *

संतन सुरीति चली आई है हमेश ते ॥
आवै जौन पास राव रंक छोटो बड़ो कोई
ताही उपदेसें नाम विमल विशेष तें ।
छावैं छबि छावनी बहावैं हाय जाय ज्वर
जीवन बतावैं रूप रमन रसेश तें ॥
लावैं निज ठौर भौंर विषम ते काढ़ि ताहि,
देवैं दिव्य ज्ञान दुति अधिक दिनेश तें ।

(श्री)युगलअनन्य साँच सोख सिखलावैं स्वच्छ,
संतन सुरीति चली आई है हमेश तें ॥

* कवित्त २३ *

सोई सतसंग जामें लागे राम रंग जू ॥
कथन बकन बैन चैन बिन गान तान,
विविध विधान उपखान हू कुसंग जू ।
मेरे मत माँझ दिव्य संग अविकार उह,
जाके किये होय अनायास भव भंग जू ॥
रहे नहीं रेख राग द्वेष को कदापि कहूँ,
बाढ़े अनुदिन उर रहस उमंग जू ।
(श्री)युगलअनन्य और संग बदरंग अंग,
सोई सतसंग जामें लागे राम रंग जू ॥

* कवित्त २४ *

छोड़िए बड़ाई लघुताई उर लाइए ।
बड़े बड़े भूपन को कठिन कलंक जंग,
जगत जवाल चाह दाह दुखदाइए ।
छोटे छोटे जीव थोरी चोज में प्रमोद मन,
पावैं सुख छावैं सोवैं मोज उमगाइए ॥

बड़ोई मतंग बांधो सीकरन खेद अति,
छोटी छोटी चींटी चरैं मुदित लखाइये।
(श्री)युगलअनन्य सूर ससि उड़गन देखि,
छोड़िये बड़ाई लघुताई उर लाइये॥

* कवित्त २५ *

जौलौं अभिमान तौलौं मोद को न घर है॥
चाहे कोटि भाँत्ति जप तप योग ज्ञान गढ़े
चढ़े न उमंग रंग अंग बरतर है।
भावै नहीं रंचहूँ परेश अवधेश उर,
फुर बात मानो अभिमान महा गर है॥
सोई संत धन्य जिन जीत्यो अभिमान नीच,
उनको न मीच कीच सदा वे अडर है।
(श्री)युगलअनन्य लघुताई धार मेरे मन,
जौलौं अभिमान तौलौं मोद को न घर है॥

* सवैया २६ *

काहू की संगति स्वप्नहुँ मांहि, न कीजिए है कुसमय दुखदायक।
होय एकांत भजो सियकांत, समर्पि के सीस सुस्वामि सहायक॥
कामना कोश कढ़ाय सदा, बसिए पद पंकज बीच सुभायक।
(श्री)युग्मअनन्य सुनाम बिना, सब साधन बाधन जानिए मायक॥

* सवैया २७ *

नाम बिना बकवाद समान, सुज्ञान औ योग विवेक की गाथा ।
होत नहीं भ्रम हानि कदाचित, रीझत हैं न कभूँ रघुनाथा ॥
होय सचेत निकेत निरन्तर, बास करो अपने सुख साथा ।
(श्री)युग्मअनन्य सियावर को, करुना ते पिवो सरजू प्रिय पाथा॥

* कवित्त २८ *

वामा से सनेह साजि सामा दुख धामा भजि,
तजि राम नामा अभिरामा ऐसो मन्द है ।
निमकहरामा चाम जामा को पहिरि तम,
तामस तमासा माँझ मगन सुछन्द है ॥
अगुन अकामा खर खामा जामें तामें बिस-
रामा मानि मोह्यो बसु जामा फसि फंद है ।
(श्री)युगलअनन्य गुनग्रामा श्याम श्याम माँह,
कियो न सुरति पति सह्यो दुख द्वंद है ॥

* श्रीसीतारामाभ्यांनमः *

नाम परत्व

* सवैया १ *

नामी मिलाप लिये तरसे, परसे न कदाचित नाम बिना ॥१॥
वामी बिनोद हिये सरसे, झरसे नहिं वासर बीज झिना ॥२॥
स्वामी सुसन्त दिये दरसे, द्युति दाम दोऊदिसि छाम छिना ॥३॥
[श्री]युग्मअनन्य अकामी भये,भलभाव प्रकाश विलासलिना॥४॥

॥ सवया २ ॥

जानकी जीवन नाम अमी, परिपूरन पाँचहुँ अङ्ग विचारो ॥१॥
एकहि एक में लीन करो, मन सन्त समागम पाय विहारो ॥२॥
नाम समर्थ स व्यर्थ कदर्थ, निवारक नैननि नित्य निहारो ॥३॥
[श्री]युग्मअनन्य उजास उदै उर, उज्वलता रमनीय सुमारो ॥४॥

* कवित्त ३ *

ऐसो समय पाय नाम रटत न जौन नर,
नरक निकेत तन सहित न लेश शक ।
षट जुग मास सुख रास ताँमे तीन शत,
साठ दिन होत द्योतकर सुविहावक ॥
रोज रोज आठ याम महामोद धाम पुनि,
घटिका सुतीस तीनि छीनता समान तक ।

(श्री)युगलअनन्य एतो साबकास स्वाँस याही,
तऊ सठ स्वास को नसाय देत मोह झक॥

* कवित्त ४ *

रटे मन लाय नाम जाम एक काम त्यागि,
पावे परमेश परानन्द धाम जीव जड़ ।
सीत बात घात तात मात सुत नात बाम,
बीचहू बितावे तऊ मिटेगो उपाधि बड़ ॥
एकहू में हाय खाय मानत अपाय हेतु,
ऐसो मतिमन्द अन्ध अधम अयोग गड़ ।
(श्री)युगलअनन्य सन्त नामी सत सीस सुनि,
करै क्रोध मूढ़ मानै वैन अति अड़बड़ ॥

* सवैया ५ *

धोखो धरा धरनी धन धाम, स लौकिक नाम अराम हू धोखो ॥
धोखो धुरन्धरता गुनहूँ, धुनहूँ दस भाँति विशेषिन चोखो ॥
चोखो वृथा रसके बिन ऊख को, लेस पियूष जहाँन संजोखो ॥
जोखो विवेक तुला जबहीं, तबहीं बिन नाम लगे सब धोखो ॥

॥ सवैया ६ ॥

चन्द चकोर चरित्र सुचिन्तन, चाह निहारिये नाह हमेशे ॥
मीन महामुद पीन सुनीर, सुलीनता हेरिय हीय बिशेषे ॥

कंज रसज्ञ मृगा जसु मोहन, औरहूँ हेतु विलोकिये वैसे ॥
[श्री]युग्म अनन्यन कीटन के सम, है सठ तू धिक जीवन ऐसे ॥

* कवित्त ७ *

सीताराम नाम अभिराम महामोद धाम,
चाहे जोन करे आश्चर्य कौन पावहीं ।
नीर बीच पावक निवास त्यों अकास मध्य,
बिबिध बिहार बाग फूले सरसावहीं ॥
राई माँझ मेरु को समोइवो समुन्द बुन्द,
सुई वेध ही से गज यूथन समावहीं ।
(श्री)युगलअनन्य परमेस की कृपा कटाक्ष,
एक रस आस और चित्त मन भावहीं ॥

धाम परत्व

॥ सवैया ॥

नाम सजीवन मूरि मनोहर, खाय बिना मृत प्रान न जागे ॥
मन्त सुसङ्ग सजाय बिना, भ्रम भावना भूत भयान न भागे ॥
धाम सिरोमनि सेये बिना, सिय वल्लभ रूप सुपाग न पागे ॥
[श्री]युग्मअनन्य निचोरि सु कोटिन,बैनभन्यो कछु शेष न आगे॥

॥ श्रीसीतारामाभ्यां नमः ॥

श्रीअवध सरयू परत्व

॥ सवैया १ ॥

श्रीसरयू सरितेशि समीप, सदा बसिये रसिये लसिये जू ॥
पीजिये प्रेम पियूष समान, सुनीर सदा दिल में हँसिये जू ॥
जानकि जीवन नाम महाधन, धौल अतौल जपे जसिये जू ॥
[श्री]युग्मअनन्य सियावर रूप, प्रतच्छ लिये कटि ही कसिये जू ॥

॥ सवैया २ ॥

पाइये प्रीति प्रतीति प्रभाकर, श्रीदृगजा तट बास सजाये ॥
धाइये धूरि निमित्त नहीं, अलसाइये तुच्छ तमाम सजाये ॥
गाइये गीत बिगीत बिना, दृग छाइये नीर सु लाज लजाये ॥
[श्री]युग्मअनन्य समाइये शौक, समुन्द सदा वर बाद्य बजाये ॥

॥ सवैया ३ ॥

अब तौ सबसे सम्बन्ध बिहाय, बिकाय के गाइहौ ज्ञेय गुनाकर॥
जानि लियो जम जाल स्वरूप, कुरूप असार प्रधान को चाकर॥
धाम निवास हुलास समेत, सजाइहौं श्रीगुरु के गुन गाकर ॥
[श्री]युग्मअनन्य प्रपन्न सियाबर, कौन को आस करे दुचितागर॥

* कवित्त ४ *

स्वच्छ सीम सुरभि समूह सावकास सुख,
सहर समिद्ध सिद्ध सोभनीक नीर है।
सीताराम सान सज सजन सुजन जिये,
जाहिर जहान जस जोति तर तीर है॥
सानुकूल सन्त सीलवन्त सियकन्त प्रेम,
प्रबल प्रवाह आह दाहनीय धीर है।
(श्री)युगलअनन्य सुचि सरित भरित रस,
स्वामिनी सरयु पद पूजित अमीर है॥

* सवैया ५ *

हैं सरिता जितनी जगतीतल, दिव्य सुधा भरिता अनुमूली॥
छ्वै न सके महिमा गुन को, छिन छाह उछाह सजाय सु फूली॥
किंकरि होय सु काज करे, गुन गर्व गरूर गँवाय अतूली॥
[श्री]युग्म अनन्य विहाय बिषय भ्रम, सेइये श्रीसरयू सहि सूली॥

* सवैया ६ *

देव धुनी जमुना जस की निधि, पाप पहार बहावनहारी॥
ज्ञान स्वरूप गिरा गरुवी गुन जेती नदी द्युति दिव्य दिवारी॥
जानकि जानि सुधा रसखानि, प्रधान प्रमान बशिष्ठजा प्यारी॥
[श्री]युग्म अनन्य गरूर गँवाय कै, सेवति श्रीसरयू बलिहारी॥

* कवित्त ७ *

सीताराम सरस सनेह रसरूप नीर,
सरयू सरित शुचि स्वामिनी निहारिये ।
भागीरथी गावें गुन नर्मदा निहारे नैन,
बैन चैन दैन कृष्णवल्लभा बिचारिये ॥
कावेरी सु कंज कर लीन्हें पानदान चन्द्र-
भागा स्वच्छ सुरभि सु भाजन सुधारिये ।
[श्री]युगलअनन्य लोक निखिल सरित सिंधु,
सेवे पद कमल अमल बलिहारिये ॥

* सवैया ८ *

श्रीसरजू सरिता सिय स्वामिनि, नेह निवासिन नीर नहीं है ॥
वारक पान प्रधान किये हिय, पातक पुंज पलात सही है ॥
जानकि वल्लभ प्रान समान, सदा सुचि सो सजि मोद मही है ॥
(श्री)युग्म अनन्य भजो विमला, सरयू कमला वर बात यही है ॥

* सवैया ९ *

श्रीसरयू विमला कमला मिथिला नित नाम सप्रेम उचारे ॥
मोद विनोद बढ़ाय हिये हरषावत बीज बिलास बिचारे ॥
जानकि जीवन रूप पियूष, सुपान किये भव भूख बिदारे ॥
[श्री]युग्म अनन्य सियावर केत, कुटुम्ब समेत विशेष पधारे ॥

* सवैया १० *

श्रीसरयू तट बास सजाइय खास निवास विचारिये प्यारे ॥
लोक कदम्बन को अवलम्ब बिसारिये व्योम समान सहारे ॥
चाह हमेश सुदेश सदा परिपूरन तूरन होत हजारे ॥
[श्री]युग्म अनन्य रमापति लोक करोरन रेनु के ऊपर वारे ॥

* सवैया ११ *

चाहिये चाह यही हिय में, निशिबासर श्रीसरयू तर तीरे ॥
होय निवास भली बिधि ही रसना रट लागि रहे रघुबीरे ॥
तुंग तरंग सुरंग अनंग निवारन हेरिये नीर गँभीरे ॥
[श्री]युग्म अनन्य प्रवाह परावर प्रेम प्रकाश मिले मन मीरे ॥

* कवित्त १२ *

इष्ट धाम माँझ तन पतन प्रयन्त बास,
सहित भरोस आस कीजिये सचेत चित ।
आन देश अभिलाष मानि कालकूट सम,
जावत जहान बीच थल जानि खेद हित॥
जोग ज्ञान ध्यान सब साधन समाजहूँ से,
नेह नाता जोड़ि तोड़ि धामसे सनेह नित ।
(श्री)युगलअनन्य दिन थोरे ही में मिले तोहि,
महारस रासी राम रसिक अजूब बित ॥

* कवित्त १३ *

सीताराम पुर बास सुर अभिलाष आस,
करें तऊ अगम सुगम नहिं जानु मन ।
जाँचें बिधि विष्णु शिव शेष शारदा गनेश,
धाम रस देश लेस बस न अखंड पन ॥
और जेते सिद्ध मुनि नायक सुविज्ञवर,
तेऊ धाम नजर निहारैं गावैं गीत गुन ।
[श्री]युगलअनन्य सोइ करुणा बिबश तोको,
मिल्यो देश सुदृग उघारिके बिलोकु धन॥

(सवैया १४)

रसना रटिये निज नाम सदा, अटिये सरयू तट कुंज गलीन में ॥
हटना नहिं नेक सु टेक हिये, कसना कटि कारन प्रेम थली में ॥
पट नाहिं रहे तोहि रंचहू फेरि, सुमेर बिशेष ही होय अलीन में ॥
घट नाहिं उपाधि अनन्य रती रस एक उमंग बिकास कलीनमें॥

* कवित्त १५ *

असन अलप सुद्ध सतो गुन लिये मित,
बचन बिचित्र मृदु मधुर उचारिये ।
रैन दिन जागरन सपन सुभाय भूलि,
धूलि धन धाम धरा जुवती निहारिये ॥

सावधान होय मनोराज खाज खेह गुनि,
धुनि मांझ मानस मगन नित धारिये।
[श्री]युगल अनन्य और कथन बकन व्यर्थ
दायक अनर्थ ताको मूल जुत जारिये॥

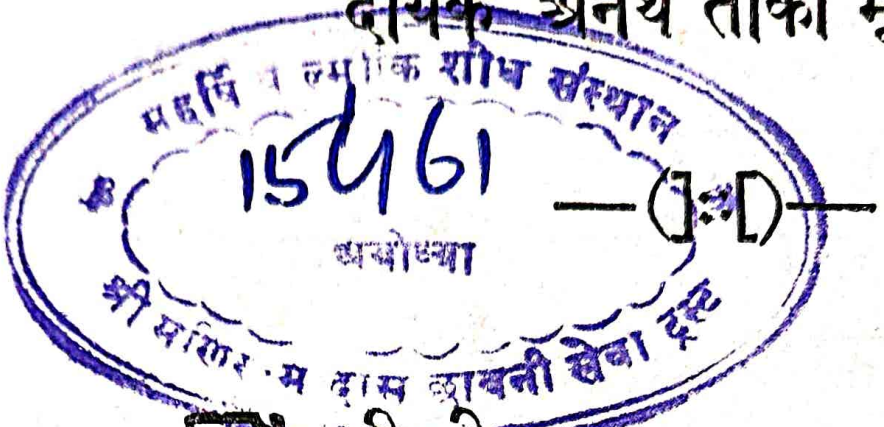

—(]:=[)—

श्रीसीताराम प्रसाद महिमा

* कवित्त १ *

देखा देखी पाइये प्रसाद न विवेक बिन,
प्रबल प्रतीति साँची बात मेरी मानियो।
इष्ट अनुकूल शूल शमन सुशीत शुभ,
अपर अनिष्ट प्रतिकूल ही प्रमानियो॥
जीभ लोभ लम्पट बिगोये कलिकाल शठ,
खात इत उत ताते मलिनइ जानियो।
[श्री]युगलअनन्य सावधान से सँवारो काज,
लाज साज पर गाज डारि सुख सानियो॥

* कवित्त २ *

पावनहूँ पावन प्रसाद प्रेम अह्लाद,
सहित सुपाये फल अमित अनूप है।
एक कन समता एकदशी अशेष ब्रत,
करि न सकत वेद महिमा निरूप है॥
सुधा हूँ ते स्वाद सीताराम जू की पराप्रीति,
दायक प्रसाद ही से मिटे धूम धूप है।
(श्री)युगलअनन्य दृढ़ कीजिये प्रतीति पटु,
बिना विश्वास सुख रहित विरूप है॥

* कवित्त ३ *

सीताराम जू के बिना आन को प्रसाद नाहिं,
पाइये प्रमाद हूँ ते दोषन को घर है।
भूलो न महातम के सुने गुने कैसे हूँ जो,
आप इष्ट कहें तौ न मानत सुघर है॥
दिव्य अनमोल मनि सम दशा नशा नैन,
वैन बिन चैन अंग अंग रंग तर है।
(श्री) युगल अनन्य अवधेश के अनन्य रस,
रसिक उपासकन रीति नेति पर है॥

* इति चतुष्ट गुटिका समाप्तम् *

श्रीः ❋

❋ कवित्त ❋

और इष्ट आस करै तौन नर खर है ॥
सूकर सोआन प्रेत पाँवर पषान जेते,
नीचे हैं जहान चलें ताको न डगर है ।
चाहै बड़ो पंडित प्रवीन गुनी ध्यानी पै,
अनन्यता विहीन सब चकर मकर है ॥
हाय जर जाय जौन जड़ निज इष्ट मिष्ट,
अवध किशोर त्यागि भजे और सुर है ।
(श्री)युगलअनन्य मुख देखिवे न योग सठ,
और इष्ट आस करे तौन नर खर है ॥

श्रीसीताराम नाम सनेह वाटिका
(कवित्त सं० १६५५)

श्रीहनुमत् प्रेस, श्रीअयोध्याजी ।